धर्म जीवन

अगस्त 2005

✡	तुम्हारे विचार के लिए कुछ प्रश्न	2
✡	मनुष्य के लिए परम आवश्यक और महान अधिकार	3
✡	पुरोहिताई (Priesthood) क्या है?	6
✡	सत्संग से विशेष लाभ	8
✡	मां को श्रद्धांजलि	12
✡	विकासकारी विभाग पर सत्य विश्वास	14
✡	Pearls Sublime	16
✡	Souls With Lower Aim	17
✡	श्राद्ध की सभा	19

तुम्हारे विचार के लिए कुछ प्रश्न

भगवान् देवात्मा की ज्योति को पाकर यदि प्रकृत धर्म का तुम्हें कुछ भी सच्चा ज्ञान हो गया हो, तो तुम भली भांत समझ सकते हो, कि जिस सत्य और देवकोष के वह भण्डार हैं, जिस पूर्ण धर्म जीवन के वह प्रकाशक हैं, उसकी विविध बोध और अनुराग शक्तियां तुम्हारे आत्मा तक पहुंचकर, तुम में उस महान उच्च जीवन को उस समय तक उत्पन्न और उन्नत नहीं कर सकतीं, जब तक तुम्हारे हृदय में ऐसे उच्च जीवन के लाभ करने के लिए धन, मान, पद, प्रशंसा, वस्त्र, आभूषण, पति, पत्नी, घर, सन्तान और विविध शारीरिक सुखों और उनके सामानों आदि की न्याईं कोई सच्ची आकांक्षा जाग्रत न हो जाए। क्योंकि जब तक किसी वस्तु की आकांक्षा उत्पन्न न हो, तब तक उसे न कोई लाभ करना चाहता है, और न लाभ कर सकता है।

ऐसे उच्च जीवन की आकांक्षा के उत्पन्न होने पर जब तक तुम भगवान् देवात्मा की (जो उस जीवन के भण्डार और दाता हैं) महिमा को सम्मुख लाकर उन के प्रति अपने भीतर सच्ची श्रद्धा अनुभव और इस श्रद्धा के बढ़ाने के निमित्त अपने आत्मा के साथ उनके सम्बन्ध की सच्ची आवश्यकता को अधिक से अधिक उपलब्ध न करो, तब तक तुम्हारे भीतर उनके प्रति वह विशुद्ध अनुराग सूत्र भी उत्पन्न नहीं हो सकता, कि जिस के द्वारा तुम उनके साथ जुड़करः-

एक ओर जहां उनके देव जीवन के देव प्रभावों को अपने भीतर खैंच सकते हो; वहां दूसरी ओर विविध नीच बन्धनों और नीच सम्बन्धियों के आकर्षण और अहं आदि उत्तेजनाओं के आधिपत्य से धीरे-धीरे निकलकर उनके विनाशकारी प्रभावों से रक्षा पा सकते हो, और अपने आत्मा के जीवन की जड़ को विनाशकारी भूमि से निकालकर भगवान् देवात्मा की जीवन दायिनी भूमि में स्थापन कर सकते हो।

अब प्रश्न यह है, कि क्या तुम्हारे भीतर उच्च जीवन के लिए कोई सच्ची आकांक्षा पाई जाती है? यदि कुछ पाई जाती है, तो क्या वह आकांक्षा बढ़ती है? क्या भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में तुम्हारे भीतर कोई सात्विक श्रद्धा उत्पन्न हो चुकी है? क्या यह श्रद्धा भी बढ़ती है? क्या उसके बढ़ने से तुम्हारे भीतर उनके प्रति कोई अनुराग अनुभव होता है? यदि होता है, तो तुम उसे किन लक्षणों के द्वारा पहचानते हो? क्या इस अनुराग के शिथिल और नष्ट करने वाले नीच भावों का तुम्हें कुछ सच्चा ज्ञान मिला है? यदि नहीं मिला, तो तुम उनके विनाशकारी प्रभाव से इस अनुराग की क्योंकर रक्षा कर सकते हो? और यदि मिला है, तो क्या तुम एक ओर उन से रक्षा पाने और दूसरी ओर उचित साधनों के द्वारा उस अमूल्य और स्वर्गीय अनुराग के बढ़ाने के लिए कोई यत्न करते हो? यदि करते हो, तो क्या करते हो? और क्या तुम्हारे साधन ऐसे सच्चे होते हैं, कि जो सचमुच तुम्हारे इस अमूल्य और जीवन दायक अनुराग के बढ़ाने में सहायता करते हैं? यदि इन प्रश्नों पर चिन्ता करके किसी ठीक सिद्धान्त पर पहुंच सको, तो आगे तुम्हारे लिए उच्च जीवन का पथ खुल सकता है, अन्यथा नहीं।

–परम पूजनीय भगवान देवात्मा के विशेष–विशेष लेख और उपदेश, पहला भाग, पृष्ठ 178–180 में से।

धर्म जीवन

खण्ड 17 अंक 5
अगस्त – सितम्बर 2005
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मनुष्य के लिए परम आवश्यक और महान अधिकार

मनुष्य जन्म पाकर, मनुष्य शरीर धारण करके अपने से निचली सब श्रेणियों से सभ्य श्रेणी का जीव कहला कर मनुष्य के लिए जो प्रथम सर्वोच्च अधिकार है और जो सबसे आवश्यक अधिकार है, वह आत्म बोध प्राप्त करने का अधिकार है। आत्म बोध जब तक मनुष्य को प्राप्त न हो, तब तक वह मनुष्य जन्म लेकर भी, ऐसी उच्च श्रेणी का जीव होकर भी नीचे की श्रेणियों के जीवों से निकृष्ट, अत्यन्त गन्दा, मैला, दुखदाई और क्लेशजनक बन जाता है। दरिंदे से दरिंदे जानवर, चीर फाड़कर खा जाने वाले अनेकों जीव कई हालत में उससे अच्छे होते हैं।

आत्म बोध के बिना उसकी ऐसी अवस्था हो जाती है, जिससे वह इतना हानिकारक बन जाता है, जो हानि हिंसक पशु भी नहीं कर सकते, क्योंकि हिंसक पशु केवल शरीरों का नाश करते हैं, वह आत्माओं का नाश नहीं कर सकते, परन्तु यह बड़ा हिंसक उनसे भी अधिक हिंसक बन जाता है, जब यह आत्माओं के नाश का हेतु बनता है।

मनुष्य जन्म लेकर और ऐसा हिंसक जीव बनने से बचने के लिए जो पहली शर्त है, वह है आत्म बोध को प्राप्त करना। केवल यह नहीं कि आत्म बोध प्राप्त किए बिना मनुष्य इस संसार के लिए क्लेशदायक और भयानक दुख देने वाला सिद्ध होता है, और इस दुनिया के लिए हिंसक बनता है, वह अपने अस्तित्व के लिए भी खूंखार शत्रु बन जाता है। अपने आत्मा का नाश करने और उसके साथ अपने शरीर का भी नाश करने में सबसे बढ़कर दरिंदा वा हिंसक बनता है। जितनी हानि, जितना क्लेश वह अपने अस्तित्व को पहुंचा सकता है, वह और कोई जन उसे नहीं पहुंचा सकता।

अब प्रश्न यह है कि आत्म बोध क्या है जिसको प्राप्त करके मनुष्य सही अर्थों में मनुष्य कहलाने का हक़दार है और जिसे प्राप्त किए बिना वह अपने लिए और इस संसार के लिए महा भयानक दुखों का उत्पन्नकर्ता बनता है और अपने अस्तित्व को ही नष्टभ्रष्ट कर लेता है?

आत्म बोध अपने भीतर की शक्तियों का

बोध है। शरीर के भिन्न जो उसके भीतर आत्मा वास करता है, जिसको लेकर ही उसका अस्तित्व है, उसका ज्ञान, आत्मा के भीतर की भाव शक्तियों का ज्ञान आत्म बोध है। इस ज्ञान की प्राप्ति से मनुष्य को यह पता लगता है कि उसके भीतर परिचालक शक्तियां कौन कौन सी हैं। उसके लिए सही अर्थों में विकासकारी और विनाशकारी हालात क्या हैं? उसके लिए कर्त्तव्य कर्म और वर्जित कर्म कौन से हैं। वह विष को विष के रूप में देखने के योग्य हो जावे, अमृत को अमृत के रूप में देखने की क्षमता प्राप्त कर ले, सांप को सांप के रूप में, बिच्छू को बिच्छू के रूप में देख सके जो वासनाओं और उत्तेजनाओं के रूप में उसके भीतर वर्तमान हैं। फिर वह नीच रुचियों का अनुचर नहीं रहता, नीच अभ्यासों को त्यागने का मार्ग ढूंढता है। जिन नीच कर्मों में वह रस और खुशी अनुभव करता था, जिन चक्कर और चिन्ताओं में पड़कर जीवन नष्ट करता था, उनके लिए दुख और क्लेश अनुभव कर सके।

वे आत्मा कितने सौभाग्यशाली हैं जिनके भीतर यह ज्योति प्रवेश कर चुकी है, वह सबसे धनवान हैं जिन्होंने आत्म बोध को प्राप्त करके विनाशकारी क्या है और विकासकारी क्या है, इसका बोध प्राप्त कर लिया है। वह सौभाग्यवान हैं जो विनाशकारी हालातों से मुंह मोड़कर विकासकारी हालातों के अपने आपको हवाले कर देते हैं। ऐसे सम्बन्धियों को ही अपना सच्चा सम्बन्धी अनुभव करते हैं जो विकास की ओर ले जाने में सहायक बन सकें, अपने आपको उनके हवाले करके, उनकी आज्ञा का पालन करके, अपने विषय में बोध प्राप्ति के मार्ग पर पड़ जाते हैं। वे यह अनुभव करते हैं कि इस अधिकार से बढ़कर कोई अधिकार नहीं। ऐसे जन ही सच्चा धर्म प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त करते हैं। नहीं तो करोड़ों मनुष्य मानव जीवन रखकर भी कीड़े मकौड़ों की तरह दुनियां की गन्दगी में लथपथ रहकर नष्ट हो जाते हैं और लक्ष्यभ्रष्ट होकर ही समाप्त हो जाते हैं।

ऐसे आत्म बोध से हीन करोड़ों जन हैं, जिनके पास धन के अम्बार हैं, जो सारी उमर भी खर्च करते रहें, समाप्त नहीं हो सकते; कई जनों के पास ऐसी विद्या है कि दुनियां की नाजुक से नाजुक समस्याओं को हल करने की क्षमता रखते हैं, वह बड़े बड़े समुद्रों और पहाड़ों को चीर सकते हैं, परन्तु शोक और महा शोक! ये सब क्षमताएं रखकर भी आत्म बोध के बिना न केवल वे इस सबके द्वारा सच्चा सुख प्राप्त नहीं कर सकते, बल्कि अनेक जनों, समाजों और देशों के लिए हानिकारक जीव बन जाते हैं, दुख और क्लेश का कारण बनते हैं। अपने किरदारों के द्वारा असंख्य हृदयों को ज़ख़्मी करते हैं और अन्त में इस विश्व से मिट जाते हैं।

नेचर के नियम सच्चे और अटल हैं, उनमें किसी के लिए पक्षपात नहीं, किसी पर रहम नहीं, किसी नियम के विरुद्ध कोई कार्य नहीं हो सकता, किसी के पक्ष में नहीं हो सकता? नेचर के नियमों के अधिकार में चाहे कोई पदधारी आ जावे, कोई विद्वान आ जावे, कोई सूरमा आ जावे, यदि विनाश के नियम पूरे करता है, तो उसकी सब योग्यताएं उसको नाश से नहीं बचा सकतीं। वह निर्धन हो, बलवान हो, विद्याहीन हो, विद्वान हो, वह हाकम हो, नौकर हो, छोटा हो या बड़ा हो, परन्तु नियम सब पर एक समान हैं।

कोई विद्वान जैसे नशा पीकर नशे की हानि से नहीं बच सकता, कोई धनी होकर, स्वादवासना के अधीन गल्त खाकर उसका धन उसकी हानियों से उसे नहीं बचा सकता। पद, सत्ता, प्रभुत्व के नशे में दूसरों पर अन्याय करके कोई मनुष्य अपने पदों के आधार पर उसके परिणामों से नहीं बच सकता। कोई मनुष्य असत्य और मिथ्याचारी होकर उसकी हानियों से नहीं बच सकता। सत्य का विरोधी होकर, सत्य को जानकर भी उसका साथी न बनकर प्रत्येक मनुष्य मिथ्याचारी बनता है। असत्य और मिथ्या मनुष्य के आत्मा के घातक रोग हैं - जिनके परिणामों से नेचर के भीतर बच सकना सम्भव नहीं।

जीवन की रक्षा सबसे आवश्यक है। जीवधारी होकर यदि जीवन ही न बच सके, धन बच जावे, मान बच जावे, जायदाद बच जावे, कुछ सांसारिक सुख प्राप्त हो जावे, सन्तान और स्त्री का सुख प्राप्त हो जावे, पद और ओहदे मिल जावें, दूसरों के सामने अपनी सुन्दर छवि स्थापित करने में भी आप सफल हो जावें, परन्तु यह सब कुछ किसी काम का नहीं यदि अपने भावों का, अपनी परिचालक शक्तियों का अर्थात् अपने आत्मा का बोध प्राप्त न होवे।

इसलिए मनुष्य के जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य अपने आप का ज्ञान प्राप्त करना है, इसके बिना दुनियां की कोई वस्तु उसको नष्ट होने से नहीं बचा सकती, इसलिए आवश्यकता है कि उन हालातों को मनुष्य पहचान सके, अनुभव कर सके, जो इस लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हों, अन्यथा उसका अमूल्य जीवन नष्ट होने के लिए है।

* * * * *

स्वस्थ हृदय के लिए

- रोजाना 8 - 10 गिलास पानी पिएं।
- बिना छाने आटे की रोटी खाएं।
- प्रतिदिन पपीता, किन्नू अथवा संतरे जैसे फलों का सेवन करें।
- किन्नू व गाजर का जूस पीएं।
- अंकुरित दालें खाएं।
- प्रतिदिन सलाद - बंदगोभी, प्याज, टमाटर, खीरा, लहुसन, अदरक खाएं।
- घी, मक्खन व तली चीज़ें कम खाएं।
- खाना धीरे - धीरे व आराम से चबा कर खाएं।
- खाना शाकाहारी रखें।
- प्रतिदिन व्यायाम करें।
- हर सुबह योग आसन करें और बाद में शवासन करें।
- क्रोध मत करें।
- चिंता हृदय की सबसे बड़ी दुश्मन है, इससे बचें।
- रोज़ाना कम से कम आधा घंटा निज का साधन करें।
- रात ठीक समय पर सोएं और ठीक समय पर जागें।

- डा. अनिल तनेजा एम. डी.

पुरोहिताई (Priesthood) क्या है?

भगवान देवात्मा ने 14 जनवरी 1919 ई० को कर्मचारियों और सेवक सेवकाओं को अपने श्री चरणों में बुलाकर चार निहायत कल्याणकारी और शक्तिशाली उपदेश प्रदान किए।

1. पुरोहिताई (प्रीस्टहुड) क्या है? और वह धर्म को लेकर नाना देशों में कैसे पैदा हुई और वह कैसे कैसे महा भयानक फल पैदा कर रही है?
2. देवसमाज के भीतर इस भयानक रोग के घुसने की सम्भावना और उसके दूर करने के कर्मगत उपाय।
3. देवसमाज के प्रत्येक कर्मचारी और उप कर्मचारी के भीतर अन्य सेवकों के सम्बंध में किस किस प्रकार की योग्यताओं के पैदा होने की जरूरत है?
4. देवात्मा में सत्य और हित के सर्व्वांग अनुराग और असत्य और अहित के सम्बन्ध में सर्वांग वैराग भावों से क्या अभिप्राय: है, अर्थात उनकी यह देवशक्तियां क्या हैं, और उनका क्या कार्य है, कि जिन के विचार से उनका आविर्भाव मनुष्य मात्र में एक अद्वितीय आविर्भाव है।

पुरोहिताई के विषय में पूजनीय भगवान ने फरमाया कि यह पुरोहिताई किसी भी समाज के लिए बहुत भयानक चीज़ है, इसलिए वह इसे देवसमाज के अंदर कदापि घुसने नहीं देंगे। इस बुराई के प्रति वह,

1. देवसमाज का काम करने वालों में घृणा उत्पन्न करके उन्हें चौकस रखके,
2. साधारण सेवकों में उसकी बुराई का प्रचार करके और उनके भीतर भी उसका बोध पैदा करके और
3. समाज की गठन में ऐसे नियम रखके कि जो इस बुराई की जड़ काटने वाले हों, आदि

ऐसे सब आवश्यक उपाय ग्रहण करेंगे, कि जिन से यह सांघातिक प्लेग देवसमाज में न घुस सके और न बढ़ सके।

फिर देवसमाज के कर्मचारियों और उपकर्मचारियों में किस किस प्रकार की योग्यताओं के उत्पन्न होने की आवश्यकता है, उसके विषय में जो बहुत सी जरूरी बातें पूजनीय भगवान ने बयान की, उनमें से कुछ यह है :-

1. वह धर्म प्रचार के प्रोग्राम के साथ साथ अपने जीवन की नियमित प्रणाली अपने सामने रखते हों, और उसके अनुसार एक व दूसरी निम्न शक्ति के अनुचित अधिकार से उद्धार लाभ करने और एक व दूसरे उच्च भाव को उत्पन्न और उन्नत करने के लिए अपने जीवन दाता सत्य देव के देवरूप तक पहुंचने और उनके देवप्रभावों को लाभ करने की, कुछ न कुछ योग्यता रखते हों, और उन प्रभावों को जहां तक सम्भव हो, अपनी योग्यता

के अनुसार प्रतिदिन लाभ करने की चेष्टा करते हों।

2. वह अपने क्षेत्र के सेवकों और सेवकाओं को अपने साथ जोड़कर उनका और अपना आत्मिक नाश करने के स्थान में जीवन दाता सत्य देव के देवरूप के साथ जोड़ने और उनके साथ उनका आत्मिक सम्बंध पैदा करने और बढ़ाने वाले श्रद्धा, आकर्षण और कृतज्ञता आदि उच्च भावों में से किसी एक व कई के उत्पन्न व उन्नत करने की न्यूनाधिक योग्यता रखते हों।

3. वह अपने आत्मा को अपने जीवनदाता के देवरूप का आश्रित और उनके देवप्रभावों का सदा भिखारी और अपने मंडल व क्षेत्र के सेवकों व सेवकाओं का केवल आत्मिक सेवाकारी भृत्य अनुभव करते हों, और वहां के सेवकों और सेवकाओं के दुख सुख और उनकी एक व दूसरी विपद व उलझन में उनके लिए हमदर्दी का भाव रखतें हों और न केवल उनमें से किसी को किन्तु उनके भिन्न किसी मनुष्य को कभी और किसी सूरत में घृणा न करते हों और किसी के सम्बंध में द्वेष व ईर्ष्या का भाव न रखते हों और उनके साथ अपनी तरफ से अपने दिल में सदा सद्भाव रखते हों और उन से फट न जाते हों, और उन्हें अपनी व अपने पारिवारिक जनों की एक व दूसरे प्रकार की वासनाओं की तृप्ति की सामग्री न समझते हों और न बनाते हों।

4. वह अपने मंडल व क्षेत्र के सेवकों व सेवकाओं की किसी क्रिया से-यहां तक कि उनकी किसी अनुचित क्रिया से भी- उनके दुश्मन न बन जाते हों, इत्यादि इत्यादि।

(भगवान देवात्मा के विशेष विशेष लेख और उपदेश, तीसरा भाग पृष्ठ 281–288 का एक भाग)

शोक समाचार

हमारे सभी धर्म सम्बन्धी जनों को यह जानकर बहुत अफसोस होगा कि श्रीमान जगदीश प्रशाद कुक्कड़ जी की माता जी श्रीमति जय देवी जी धर्म पत्नि परलोकवासी श्रीमान मक्खन सिंह जी कुक्कड़ का दिनांक 30-6-2005 को सांय 6:15 को निधन हो गया। वे 89 वर्ष की थी और पिछले तीन महीने से बीमार चल रही थीं। उनके श्राद्ध की सभा तारीख 6-7-2005 को उनके निवास स्थान श्रीगंगानगर में श्रीमान बल बहादुर सिंह जी ने करवाई।

सत्संग से विशेष लाभ

इस विशेष सत्संग में शामिल होकर मैं जहां अपने आप को सौभाग्यवान महसूस कर रहा था, वहां मेरा हृदय बार बार सहायकारी शक्तियों को धन्यवाद दे रहा था कि किस प्रकार ऐसे स्वर्गीय दृश्य देखने को मिलते रहे हैं। हृदय में उच्च विचार सामने आते रहे हैं। पहली सभा में ही मेरे सामने कुछ कुछ तस्वीर बन रही थी कि किस प्रकार उच्च असरों से मनुष्य की अलग अलग दुनिया बन जाती है। मुझे यह बात realise हो रही थी कि एक एक बार नीच असरों में घिर कर किस प्रकार यह बात स्पष्ट रूप से मेरे सामने ही नहीं आती कि उच्च असरों का खेल भी विश्व में जारी है। यह पढ़कर भी उसकी कोई तस्वीर नहीं बनती। गुरु महाराज के असरों की भी कोई दुनिया है, यह बात भूल ही जाता हूं। मुझे बार बार सभा में बैठे हुए याद आ रहा था कि गुरु महाराज के उच्च असर या तो इन सत्संगों में मिल सकते है या उनके literature से। मेरे सामने कई उदाहरण सभा सुनते सुनते आ रहे थे कि किस प्रकार एक एक जन नीच संगत में रहकर पतन की अवस्था में पहुंच गया है।

ऐसे उच्च असरों में बैठकर यह सोच विचार मन में आ रहा था कि जितना ज्यादा से ज्यादा सम्भव हो सका उच्च असरों में रहने की कोशिश करूंगा व उच्च ग्रंथों का पाठ करने के लिए ज्यादा से ज्यादा समय निकालूंगा।

भगवान देवात्मा के देवअसरों द्वारा मनुष्य का कैसे कल्याण होता है अर्थात गुरु महाराज के प्रभावों में रहकर एक एक कर्मचारी कहां से कहां पहुंच गए, किसी अंश इस तरफ ध्यान जा रहा था और इन सभाओं में बैठकर मैं अपने आप को बड़ा सौभाग्यवान महसूस कर रहा था।

इसके बाद जब श्रद्धा को लेकर सभा की गई, तो उसमें भी कुछ उच्च जीवनों की तस्वीरें मेरे सामने आ रही थीं। जिन जिन श्रद्धावानों के उदाहरण पेश किए गए, उनके आगे भी हृदय झुक रहा था। मुझे कुछ अध्यापकों के गुण भी नज़र आ रहे थे और क्या गांव में भी नेक लोगों की तस्वीरें किसी अंश सामने आ रही थीं। सबसे ज्यादा इन सभाओं में बैठकर मेरा हृदय कुछ विशेष कर्मचारियों की तरफ जा रहा था। उन विशेष हस्तियों के उदाहरण जब भी सभाओं में पुकारे जाते रहे हैं, ऐसी हस्तियों के नाम सुनकर ही हृदय एक विशेष रस से भर जाता रहा है। जब कुछ लोग दूसरों के गुण बता रहे थे, तो मेरे सामने बार बार अपने बड़े भाई साहिब के गुण नज़र आ रहे थे। उनके सामने हृदय झुक रहा था। मुझे इस बात का गर्व महसूस हो रहा था कि मैं ऐसी हस्ती का भाई हूं। उनके अंदर इंसाफ का साथ देने कि जो हिम्मत है, उसको सामने लाकर हृदय झुक रहा था। उनके अंदर गुण तो और भी काफी हैं परन्तु जो इंसाफ का भाव उनके अंदर वर्तमान है, वह एक अलग नजारा है। बिना किसी की परवाह किए कि लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे, घरवाले, रिश्तेदार, गांव वाले व दोस्त क्या सोचेंगे उनको इस बात की परवाह नहीं। परन्तु जब कि क्या हमारे गांव में व क्या अपने और आस पास उनको लगता है कि यहां शरेआम बेइंसाफी हो रही

है तो जो कुछ वह कर सकते हैं उसको करने में पीछे नहीं हटते। जब भी उनसे मिलने का समय मिलता है या जो उनके सम्पर्क में रहते हैं, उनसे मिलने का समय मिलता है, तो हर बार एक नई से नई घटना सुनने को मिलती है। जब से मैंने उनको देखा है वह क्या बच्चों को पढ़ाई में मददगार होने में व अन्य गांव में लोगों की मदद विशेषकर इंसाफ को लेकर करते रहे हैं, यहां तक कि अपनी जान की भी कई बार परवाह नहीं की, उसको सामने लाकर हृदय झुकता है। कई बार ऐसी सोच चलने लगती है कि इनके अंदर ऐसी विशेषता कहां से आ गई। हमारे पारिवारिक किसी भी जन में ऐसी विशेष चीज़ कहीं नहीं मिलती।

इस प्रभावशाली मंडल में बैठकर मेरे सामने उनके जीवन की कई तस्वीरें सामने आ रही थीं कि किस प्रकार उन्होंने वह काम करके दिखाए हैं व साहस दिखाया है जहां पर मनुष्य करने को तो दूर, सोचने में भी डरता है कि हमने इन कामों से क्या लेना। फिर किसी विरोधता की भी परवाह नहीं की। शुक्रगुजारी की सभा में मुझे महसूस हो रहा था कि किस प्रकार मेरे श्रद्धेय माता पिता जी ने व भाई बहनों ने मेरी पालना में, मेरी रक्षा व शिक्षा को लेकर एक विशेष भूमिका निभाई है, उसको सामने लाकर हृदय दीनता की अवस्था में आकर उनके सामने झुक रहा था। मेरे श्रद्धेय माता पिता मेरे दूसरे भाईयों की तरह मेरी पढ़ाई में भी जो सहायक हुए है, वह अति विशेष है। खुद साधारण कपड़े पहनकर साधारण खाना खाकर, अपने सुख सुविधाओं की परवाह न करके हमें अच्छी से अच्छी जगह पढ़ाने का अवसर प्रदान किया है, हां अपनी योग्यताओं से बढ़कर हमारे लिए विशेष कर पढ़ाई में खर्च किया है। माता पिता खुद ज़्यादा पढ़े न होकर पढ़ाई की असल कीमत जरूर जानते हैं। उन्होंने मेरी बिमारी के दिनों में, मेरी जो जो सहायता की है उसकी कुछ तस्वीरें सामने आ रही थीं परन्तु साथ में अपनी नीच प्रकृति पर दु:ख भी हो रहा था कि मैंने किस प्रकार एक एक समय में उनका भला कहना न मानकर उनका अपमान किया है, उनको सताया है। हां कई बार अपने मुंह से बुरा भला भी कहा है। माता जी को गालियां दी हैं। उनकी किसी बिमारी की परवाह न करके कभी कोई दु:ख तक महसूस नहीं किया है कि उन्होंने किस प्रकार मेरी बिमारी में रक्षा की है और मैं उनके लिए क्या कर रहा हूं। माता जी को किसी से कोई चीज मांगना अच्छा नहीं लगता परन्तु फिर भी किस प्रकार मेरी पढ़ाई में अगर उनके पास रुपए की कमी होती तो दूसरों से पकड़कर मुझे दिए हैं। मैं महानीच कई बार झूठ बोलकर रुपए ले लेता था कि मुझे पढ़ाई में खर्च करने है परन्तु कर कहीं और देता था। मुझे यह महाकमीना व घटिया रूप सामने लाकर दु:ख हो रहा था। उनकी मेहनत से कमाए एक एक रुपए की कोई कीमत नहीं समझी।

ऐसे विशेष वातावरण में बैठकर उनके उपकार मुझे हिला रहे थे। मुझे यह महसूस हो रहा था कि उन्होंने जिस प्रकार हमारी पालना में कई मुश्किलों का जो सामना किया है, बहुत थोड़े ही मां बाप ऐसे होते हैं जो ऐसा कर पाते हैं।

उन्होंने जिस प्रकार गांव में रहकर भी अपने जीवन के कई पक्षों में उच्च असर डाले हैं। शुरु से ही मांस, नशों, चोरी, जुआ आदि मोटे मोटे पापों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई थी। पिता जी ने सारा जीवन ईमानदारी का जीया है। मुझे कोई घटना

ऐसी उनके जीवन की सामले नहीं आ रही कि जिससे उन्होंने किसी की कोई रकम दबा कर रखी हो। किसी का कोई कर्ज़ा दबा कर रखा हो या रुपयों को लेकर किसी से झगड़ा किया हो या हमारी सभी भाई बहनों की पालना व शिक्षा में रुपए को लेकर कंजूसी की हो। उनके उच्च असरों में रहकर अब महसूस होता है व बड़ा गर्व होता है कि मुझे ऐसे माता पिता मिले हैं।

मुझे इस विशेष सत्संग में बैठकर उनका एक उपकार सब उपकारों से बड़ा नजर आ रहा था। वैसे तो जब मैं अपने शरीर को बिना किसी बीमारी के पाता हूं व सारे अंगों को स्वस्थ पाता हूं व किसी अंश मानसिक शक्तियों को भी अपने विकास में सहायक पाता हूं तो उनके यह उपकार भी विशेष हैं; परन्तु मुझे गुरु महाराज का दर मिल गया, ऐसे विशेष सत्संग में बैठकर एक एक बार हृदय धन्य धन्य हो उठता हूँ। गुरु महाराज के अद्वितीय ग्रंथों का पाठ करके हृदय विशेष उच्च रस से भर जाता है। कभी कभी गुरु महाराज की कृपा से माता पिता का यह उपकार इतना बड़ा दिखाई देता है कि मुझे उनकी संतान होकर किसी अंश ऐसा हृदय मिला है कि जिससे मैं स्वयं को दूसरे भाई बहनों से कई पक्षों में बिल्कुल भिन्न पाता हूं। अब मुझे सिर्फ एक ही चिंता रहती है कि मुझे माता पिता से क्या हार्दिक व क्या मानसिक जो अच्छी पूंजी मिली है उसको यूं ही खत्म न होने दूं। उसके द्वारा अपनी Life को कुछ meaningful बना कर जाऊं।

गुरु महाराज की संगत में आकर जो कुछ भला हुआ है, उसका सही ब्यान करना मेरी योग्यता से बाहर है। मुझे कई बार बड़ी हैरानी होती है कि किस प्रकार एक एक बहुत पढ़े लिखे भी मिथ्या व पापाचार में किस कदर लथपथ हैं। गुरु महाराज का कितना बड़ा उपकार कि मुझ ऐसे तुच्छ व कम योग्यता रखने वाले को भी मोटी मोटी मिथ्या व पापाचार से ब्रेक लग गई है। कम मानसिक शक्तियां रखकर भी दृष्टिकोण विज्ञानमूलक होता जा रहा है। किसी अंश दूसरों की महानता भी सामने लाकर हृदय को झुकाती है। गुरु महाराज की अद्वितीय संगत और उनका अद्वितीय Literature पाकर ऐसे लगता है कि इस जीवन का ज़रूर कुछ न कुछ बन सकेगा। यह सब गुरु महाराज की कृपा है। सभाओं में बैठे बैठे यह महसूस कर रहा था कि अगर मुझे ऐसे गुरू व उनकी संगत न मिलती तो मैंने माता पिता के साथ कैसा सलूक करना था उस तस्वीर को सामने लाकर भी हृदय गुरु महाराज के सामने झुकने लगता है कि हे भगवन! मैं तुच्छ आपके सिर्फ इसी उपकार का भी कभी कर्ज़ा नहीं उतार सकूंगा। एक समय था जब मेरे एक साथी सेवक कह रहे थे कि आप माता पिता जी को प्रणाम किया करें तो मैंने उनसे कहा था कि मैं बाकी सब काम कर सकता हूं परन्तु माता पिता को प्रणाम नहीं कर सकता क्योंकि उस समय मुझे ऐसा करने में बहुत ही शर्म महसूस होती थी। अब गुरु महाराज की कृपा से उनकी गैरमौजूदगी में भी अपने माता पिता के चरणों को सामने लाकर उनको प्रणाम करता हूं। अब किसी अंश यह भी महसूस होता है अगर माता पिता इस तरह नेक जीवन न रखते व ऐसे विशेष विशेष उपकार न करते तो मेरी हालत क्या होनी थी। अब उनके दुःख सुख को भी किसी अंश महसूस करने लग गया हूं। सुबह जहां गुरू महाराज के सामने हृदय झुकता है, वहां माता पिता जी का रूप भी सामने

आ जाता है कि अगर मैं किसी अमीर से अमीर घर में भी पैदा होता, किसी विद्वान से विद्वान के घर में भी पैदा होता, हां यहां तक कि बहुत उच्च कोटि के धार्मिक हस्ती के घर में भी पैदा होता तो इस बात का कोई सबूत नहीं कि मुझे ऐसे अद्वितीय आविर्भाव का पता चलता, भले ही मैं सेवक होकर भी गुरु महाराज के आन्तरिक स्वभाव को नहीं जानता।

इन सभाओं के विशेष वातावरण में बैठकर मुझे एक एक बार याद आता रहा है कि माता पिता ने किन किन कठिनाईयों में से गुज़रकर हमें बड़ा किया है। हमारी पालना की है परन्तु मैं महादुर्बल व महानीच ऐसे माता पिता को वह सम्मान न दे सका जो देना चाहिए था। उनके सम्बंध में जो जो गल्तियां की है, उसके लिए उनके चरणों में गिरकर माफी नहीं मांगी जो मांगनी चाहिए थी।

काश! मैं ऐसे देवता माता पिता को समझ सकूं। गुरु महाराज की रोशनी में उनके अच्छे जीवन की तस्वीरें ज्यादा से ज्यादा सामने ला सकूं। व उनके उपकार, उनकी कुर्बानियां जो उन्होंने हमारी पालना के लिए किए हैं व उनके दुःख दर्द को सामने लाकर उनके लिए सेवाकारी हो सकूं तो मैं समझूंगा कि मेरा जीवन ज़रूर किसी न किसी अंश सफल होगा।

सुखदेव

देव – वाणी

किसी के सम्बन्ध में झूठी बात तो किसी प्रकार से भी किसी के सामने न बतानी चाहिए परन्तु यदि किसी की सच्ची खराबी या ग़लती भी बिना उचित कारण के किसी और को बताई जावे, तो उससे न अपना, न उस जन का, न समाज का, न गुरु का, किसी का भी भला नहीं होता। ऐसा जन केवल अपने घमंड और घृणा भाव की तृप्ति के निमित्त ही ऐसा करता है। अपने आपको बढ़िया और औरों को घटिया प्रगट करने में मनुष्य को आराम मिलता है। यूं तो ऐसा जन सेवक रहने के भी योग्य नहीं, परन्तु कर्मचारी तो किसी प्रकार से भी नहीं रह सकता।

मां को श्रद्धांजलि

मेरे विशेष सम्मान के योग्य बीजी,

हाथ जोड़कर सिर झुका कर प्रणाम करती हूं।

आपके जाने के बाद ऐसा लगता है - जैसे सिर से छत ही उड़ गई हो। अपने आप को असुरक्षित महसूस करती हूं। अपने आस पास जो सुरक्षा का घेरा था, वो टूट गया लगता था। आपका जन्मदाता, रक्षाकर्ता, पालनकर्ता, शिक्षादाता रूप व सब से बढ़कर जो प्यार भरा हाथ हम पर रहता था, वो सब सामने आकर जहां आपका उपकारी रूप सामने आता है, वहां आपके चले जाने से अपने आप को अकेला महसूस करती हूं।

आप एक बहुत ही हिम्मत वाली औरत थीं। आपके चेहरे पर मैंने कभी भी बहुत ज्यादा घबराहट नहीं देखी। पापा जी के जाने के बाद आप अकेली हो गई थीं मगर उन हालात में भी आपने अपनी समझ के मुताबिक मज़बूती का परिचय दिया।

मैं बचपन से हर 6 महीने में गले के कारण बीमार हो जाया करती थी तो आप मुझे डाक्टर के पास ले जाकर दवाई दिलवाते और जब Injection के बाद बेहोश हो जाती थी आप डाक्टर को पहले ही बोल देते कि इस को अभी पड़ी रहने दो। घर आने पर मेरा बहुत ख्याल करतीं।

मेरे exam के दिनों में जब पढ़ाई का ज़ोर होता, मैं सारा सारा दिन पढ़ती रहती और खाने की सुध न रहती तो आप डरते डरते मेरा दरवाज़ा खोलतीं कि उठकर कुछ खा ले तो मैं जोर से बोलती कि जब खाना होगा तो आ जाऊँगी। मुझे अपने आस पास शोर पसंद न था तो आप इधर उधर का ख्याल रखतीं कि कोई ज़ोर से न बोले।

आप बहुत ही सेवाकारी रही हैं। क्या बाबा जी, क्या पापा जी की और बाकी रिश्तेदारों की सेवा में कभी आप को मुंह सिकोड़ते नहीं देखा। मुझे ऐसा लगता है कि मैंने कभी आपको खाली बैठे देखा ही नहीं है। हर वक्त काम और काम। इसी कारण जब आप वृद्धावस्था में आईं तो चिंता में रहतीं कि कैसे मैं इनका ख्याल रखूं। अपने आप को मजबूर समझने लगीं। दिल ही दिल में दुःखी होती थी कि मैं इनकी सेवा नहीं कर सकती।

आप में दान का भाव भी था, थोड़ा थोड़ा गरीबों को, पंडितों को, गऊशाला को दान करती रहती थीं व पापा जी के द्वारा आपने अपनी माता जी के नाम भी ट्रस्ट बनवाया।

बचपन में सर्दियों में मेरे पैर सूज जाया करते हैं। महोत्सव पर मैं जब आंगन में गुरु महाराज

के जन्म दिन वाले दिन खड़ी होती तो बार बार मुझे कहती कि जा अंदर जाकर हाल में बैठ जा फिर सभा में मेरे पैरों को दबा कर मुझे आराम देने की कोशिश करतीं।

सब बहनों की शादी के बाद एक मैं ही मोगा में थी जो बाहर के सारे कामों में उनकी सहायता कर सकती थी। उन्हें मुझे कोई काम कहने में दिक्कत न होती थी मुझे इस बात के लिए खुशी होती थी। मेरे पति नरेश जी ने उनकी किसी बात को नहीं टाला। वो बड़े प्यार से उनको अपना हक समझ कर काम कहतीं कि नरेश जी यह काम है। जब भी मेरे U.S.A. जाने की बात होती तो आप को घबराहट होने लगती कि अब मेरा क्या होगा। मुझे तो तुम्हारे बिना Moga ही सूना लगता है। अब मैं अपना काम किस से कहूंगी। फिर कहते कि आ जाना कहीं वहीं पर ही न बैठ जाना। मन में एक टीस सी उठती और अपने आप को मजबूर पाती।

अपने आप पर बहुत फटकार व लानतें पड़ती हैं कि मैंने अपने बच्चों को पहल दी और मां के पास न आई। बहुत शर्मसार हूं ऐसा लगता है कि जैसे परलोक से पापा जी भी बहुत नाराज़ हैं कि आप अपनी मां को ऐसे कैसे छोड़ सकती हो। अंतिम समय में उनके पास वो ही बहनें थी जिनको सुनाई कम पड़ता था। यह सोच कर कि उन्होंने न जाने कितनी बार अपनी जरूरत के लिए कुछ मांगा होगा, अपना दर्द कहा होगा, व कहना चाहा होगा लेकिन उनकी समझ में न आया होगा। ऐसे हालातों के बारे में सोचकर बहुत ही फटकार पड़ती है अपने आप को उनकी बेटी कहने में शर्म महसूस करती हूं। आज पापा जी की नजरों में भी अपने आप को दोषी समझती हूं।

फोन पर मेरी आवाज सुन कर खुश हो जाते थे, मैं अपने आप को guilty महसूस करके कि जब सेवा ही नहीं कर सकती तो फोन करके हाल चाल क्यूं पूछती हूं। फिर सोचती कि जैसे मैं अपने बच्चों को प्यार करती हूं वो भी अपने बच्चों की आवाज सुनना चाहती होंगी।

बीजी, मैं अपनी गल्तियों की माफी मांगती हूं। मां बाप तो माफी देने के लिए तैयार ही रहते हैं यह ही सोच कर तसल्ली कर लेती हूं।

आप को परलोक में पापा जी का व दूसरे अपने प्यारे सम्बन्धियों व उच्च परलोक वासियों का साथ मिले व उनकी उच्च सहायता मिले जिसे पाकर आप परलोक में तरक्की करें। यहां की रूकावटें आपको रास्ते में न आएं, अपने बच्चों का मोह छोड़ दें। हमारे शुभ की प्रार्थना करें और हम सब बहिनें भी आपके परलोक के सफर की तरक्की की कामना करती हैं।

दुःखी दिल से आपकी बेटी

भोली (शशि)

(सुपुत्री श्रीमान शादी लाल जी)

विकासकारी विभाग पर सत्य विश्वास

तुम भलाई के काम में विशुद्ध उच्च भावों से लग जाओ। इस काम में यदि तुम्हें अपने स्थूल शरीर का भी त्याग करना पड़े, तो उसके लिए भी प्रस्तुत रहो। तुम विश्वास करो कि विशुद्ध परोपकारी बनने से तुम्हारी उचित आवश्यकताएं अवश्य पूरी होंगी। जैसे एक एक जुएबाज़ अपना सब कुछ लगा देता है, वैसे ही तुम परोपकार के लिए सब कुछ लगा दो और जब ऐसा समय आ जावे कि तुम्हारे पास कोई नक़दी न रहे, कोई सम्पति भी न रहे, तब तुम हमारे पास तार भेज दो, फिर हमारा यह कर्त्तव्य होगा कि हम अपने कपड़े लत्ते तक बेच कर भी तुम्हारी सहायता करें और तुम्हें भूखा न मरने दें। जब तक ऐसा समय न आवे, हिम्मत से काम किए जाओ, विश्वास रखो कि तुम भूखे नहीं मरोगे। शोक! अहं अनुरागी को इस सचाई पर निश्चय नहीं होता, वह कहता है: हाय मैं परोपकार में लगने से भूखा मर जाऊंगा परन्तु मैं तुम्हें दृढ़ विश्वास दिलाता हूं कि तुम भूखे नहीं मरोगे। एक दफा का ज़िकर है कि हमारे एक बच्चे के पास शेर की तस्वीर का एक खिलौना था। वह उसे हाथ लगाने से डरता था। हमने उसे कहा कि यह तुम्हें खाएगा नहीं, यह मुर्दा है, परन्तु फिर भी वह उसे छूता तक नहीं था, वह डरता था कि यह कहीं मुझे खा न जाए। इसी प्रकार से एक दफा ऐसा हुआ कि हम देहली में म्यूज़ियम देखने के लिए गए। उसमें बहुत से मरे हुए पशुओं की शक्लें थीं। हमने बच्चे को कहा कि इन मरे हुए पशुओं को हाथ लगाओ, परन्तु बच्चा डर के मारे उन को हाथ नहीं लगाता था। हमने उसे पकड़ कर उन पशुओं पर लिटा दिया और कहा कि देखो तुम मरे नहीं हो। हूबहू तुम्हारी भी यही हालत है। हम अपना ज़िन्दा दृष्टान्त तुम्हारे सामने पेश करते हैं कि हमने जगत के परम कल्याण के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर दिया है, फिर भी हम बखूबी ज़िन्दा हैं, देवत्वसिंह जी ने भी ऐसा किया वह भी भूखे नहीं मरे, फिर भी तुम विश्वास नहीं करते। जहां डर की कोई बात नहीं, तुम वहां भी डरते हो। तुम अपने पेशे के काम पर तो विश्वास करते हो कि वह काम करके तुम्हें खाने को मिलता रहेगा परन्तु विशुद्ध परोपकार के काम पर विश्वास नहीं कर सकते। कैसा शोचनीय दृश्य! तुम तब तक तो काम किये जाओ, जब तक कि तुम्हारे लिए भूखे मरने की नौबत न आवे। जब ऐसी नौबत आ जावे, तब हमें तार दे देना हम फौरन तुम्हारी सहायता करेंगे। इस पर भी यदि तुम्हारा दिल न मानता हो तो हम लाचार हैं। समय के साथ और अन्य विश्वासी जन आ जाएंगे। परन्तु तुम्हारी ज़िन्दगी न बनेगी। नेचर कहती है कि यदि तुम विशुद्ध भावों से कोई परोपकार का काम नहीं कर सकते, तो मैं सब तुमसे छीन लूंगी, यदि तुम अपने तन, मन, धन को परोपकार में लगा सको, तो मैं तुम्हारा भला करूंगी। यदि तुम देव समाज के सर्वश्रेष्ठ कार्य में अपनी सब शक्तियों को लगा

दोगे, तो जैसे तुम्हारा भला होगा वैसे ही तुम्हारे द्वारा औरों का भी भला होगा और देव समाज की हिस्टरी में तुम्हारा नाम हमेशा के लिए ज़िंदा रहेगा। ऐसी अवस्था में हम जिस प्रकार से देवत्व सिंह जी का दृष्टान्त देते हैं, वैसे ही तुम्हारा भी दृष्टान्त देंगे, वरना तुम खुद नष्ट हो जाओगे और औरों को भी नष्ट करने का कारण होगे। सिंह नाम रखवा कर काहे को घबराते हो और क्यों पीछे हटते हो? आगे बढ़ो और परीक्षा करके देखो कि परोपकार में लगने से तुम भूखे नहीं मरोगे।

हमने जब से जीवन ब्रत ग्रहण किया है, तब से हमारे लिए कई दफा ऐसे हालत पैदा हुए हैं जिन में हमारे लिए साधारण निर्वाह करना भी कठिन हो गया परन्तु हमने कभी भी उस की परवाह नहीं की। हमने हमेशा इस नियम की पैरवी की है कि हमें नेचर के विकाशकारी कार्य के लिए सच्चा रहना चाहिए, यह नेचर का फर्ज़ है कि वह हमारी उचित आवश्यकताओं को पूरा करे। हम भलीभांति जानते हैं कि नेचर हमारी अवश्य सहायता करेगी, क्योंकि हम उस में विकास लाने के लिए उत्पन्न हुए हैं। जिस प्रकार का एक फौज का जरनैल और उसके सिपाही क़ौम के निमित्त जब मैदानजंग में होते हैं, तब वह खुद अपनी शारीरिक आवश्यकताओं का ख्याल कुछ नहीं करते, बल्कि कौम उन की आवश्यकताओं का ख्याल रखती है, वैसे ही हम जिस नेचर के विकाशकारी विभाग की ओर से मिथ्या और पाप को दूर करने और सचाई और भलाई का राज्य लाने के लिए जंग कर रहे हैं, उसमें हमारी शारीरिक और अन्य आवश्यकताओं का भार नेचर के ऊपर है। इस के भिन्न हमारे सामने यह भी रहा है कि बिलफर्ज़ यदि सच्चाई और भलाई की जय न भी हो और नेचर हमारा साथ न भी दे, तो भी हम यह कहते हैं कि हम तो हैं, हमें अपने लिए सदा सच्चा रहना चाहिए। गो यूं यह सच नहीं है कि नेचर ऐसे जन का साथ नहीं देती, वह देती है और अवश्य साथ देती है।

तुम्हें अपने भीतर इस सच्चे विश्वास भाव के पैदा करने की नितान्त आवश्यकता है कि विशुद्ध परोपकारी जन की अवश्य उचित रक्षा और सहायता होती है। नेचर में जो परोपकारी जन होते हैं, उनके सम्बन्ध में नेचर में ऐसा अटल नियम वर्तमान है कि उन की अवश्य उचित रक्षा होती है।

PEARLS SUBLIME .....

Proclamations of Bhagwan Devatma freely translated from "*Param Poojniya Bhagwan Devatma ke besh baha vachnon ka gutka*" published in Urdu in 1964.

IN RELATION TO DEVATMA (Continued from the previous issue)

21. “O' Lord! May I be possessed by you (the Devatma)." This sentence is meaningless. Do you see somewhat what that possession means? That possession implies that in that particular respect mine and not thine will may prevail and your practical life should prove it. Only then there is hope for you, otherwise my mere blessings will be of no use.

22. It is only the compulsive love of the Devatma- truth and goodness personified- that is the source of supreme good for any one. No other love for any human being or some other object is and can ever be the cause of supreme good.

23. To remain in union with the Devatma is indispensable for your true spiritual emancipation and evolution. The way a lactating mother will be helpless if her child does not suck milk, the Devatma will be helpless in the absence of any attraction in anyone for his highest spiritual influences. A fit soul can get true emancipation and evolution with the acquisition of highest spiritual influences of Devatma.

24. It is the highest privilege and gain for anyone to be able to realize and establish one's spiritual relationship with the '*Dev Roop*' (the truth and goodness personified) of Devatma.

25. Even in my gravest illness, I would cherish to die while remaining yoked in my unique and supreme benevolent work.

References:
21. (Satya Dev Samvad 12.8.30)
22. (As above)
24. (Twelve 'Mool Vakya', No. 9)

A Treat for the Blossoming Souls

Souls With Lower Aim

In ordinary men, there is so much love prevalent for vile aim and, consequently, for evil, that no matter where we may look around, we find millions and millions of such persons of various creeds on this earth who are engrossed in different sorts of evils. Not only those are wicked, who are caught red handed and put behind bars. There are millions and millions others who though they don't go to jail, keep indulging in sinful and vicious acts. There are so many such judges who daily take bribes, do injustice while deciding court cases, hold the truthful as false and the false as truthful, commit adultery, go even to the extent that when any helpless lady of good conduct comes to them in connection with a case, they remain ever ready to outrage her modesty. They use intoxicants. In spite of all this, they get ample respect among people because of having the magistrate's post and their big salary or as a result of their being rich. They are invited with great honour in big congregations - so much so that some of them are even appointed heads or leaders of one or the other religious societies. They are regarded as prominent and respectable gentlemen. These are so many government officers and their agents, so many contractors, lawyers, doctors and businessmen or persons in other professions, who earn money very dishonestly. Some among them who also gain titles of Rai Bahadur and Khan Bahadur through flattery or money power are looked upon with respect among thousands and millions of people and are regarded as eminent and very honourable gentlemen. However, a hooligan, a dacoit or a gambler who may be better in comparison with these so called gentlemen in many respects, does not command that respect and honour which the aforesaid persons command because of his being poor and because of his ignoble profession. Likewise, he is not regarded as an honourable and noble gentleman like them. On pondering over this basic principle in its entirety, a thoughtful person very well realizes that as long as the aim of the so-called

hooligan or a so called gentleman remains low, i.e., their primary objective remains gratification of their desire for money, name, fame, title, position, bodily comforts, revenge etc., their life course does remain base; and as far as their viciousness is concerned, there remains only a difference of low or high degree between them. If we visit a hospital, we find that all the patients in a room are suffering from fever; that is, one is running a temperature of 102°, another one 103°, still another one 104° and yet another one 105°. Then, we can say in respect of them that there is definitely some difference in their temperatures, but in reality all of them are suffering from fever. In the same way, there are persons in this world who are engrossed only in the gratification of their sensuous and ego desires and consider their gratification as their one and only aim of life. There can definitely be some difference in the type of their sins or evil actions. There can also be a difference in degrees among their one type of sin; but they all tread the same path from the point of view of vile aim and, therefore, indulge in evil actions. Irrespective of whether such persons are regarded as gentle, noble etc. by similar people or called by bad names such as hooligan etc., they all follow one and the same vile aim.

Having any vile aim, no one can gain true higher life. Except Dev Dharma, there is no religion prevalent in the world in which true teachings are imparted regarding the consequences of higher aim, higher life higher actions, the vile aim, the vile life and vile actions etc. Being devoid of knowledge about this basic principle of life, various types of religious sects on this earth are found to stray from the true path of life even while they falsely boast of their superiority as compared to others. And millions and millions of people ruin their life's invaluable inheritance constantly by pursuing only lower aim instead of higher aim. May the light discerning lower and higher aim spread wider and wider! May capable persons come into being to spread it, and may the sewaks of the Dev Samaj develop greater and greater consciousness of their own plight!

(English rendering of article from "Param Poojniya Bhagwan Devatma Ke Lekh Aur Updesh" Vol. III, P. 218-221, Dec. 1939)

श्राद्ध की सभा

हमारे सन्मान के योग्य श्रीमति जय देवी जी कुक्कड़ धर्म पत्नि श्रीमान मक्खन सिंह जी कुक्कड़ जो कि श्रीमान जगदीश प्रसाद जी कुक्कड़ की माता जी है, उनका परलोक गमन 30-6-05 को उनके निवास स्थान श्री गंगानगर (राजस्थान) में हो गया है। वहां श्रीमति जय देवी जी की इच्छा के मुताबिक उनका अन्तिम संस्कार देवधर्म की विधि के अनुसार 1-7-05 को सुबह 8:30 बजे गंगानगर में किया गया। इसके लिए हमारे बहुत ही सन्मान के योग्य श्रीमान बलबहादुर सिंह जी गंगानगर में पहुंच गए थे। उन्होंने देह त्यागी के लिए हृदयगत भावों से शुभ कामना की। इसके बाद उनके पारिवारिक जनों ने देह त्यागी को अग्नि भेंट किया। 3-7-05 को उनकी अस्तियों को चुन कर गंगानगर के समीप कैनाल में प्रवाहित किया गया।

6 जुलाई को सुबह 11:00 बजे श्राद्ध की सभा रखी गई। इस सभा के लिए श्रीमान बलबहादुर सिंह जी अपने निवास स्थान से पधारे। इस सभा के लिए उचित ढ़ंग से तैयारी की गई। करीब 700-800 के करीब जन आकर शामिल हुए। पदमपुर से 15-20 सामाजिक जन आए। इसके लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा की सुन्दर छवि का प्रबन्ध किया गया। बहुत ही सुन्दर हार के साथ भगवान की छवि का अर्चन किया गया। और एक वैराग्य विषयक गीत गाया गया। फिर परलोक वासी माता श्री मति जय देवी जी कुक्कड़ की सुन्दर फोटो पर परिवार के साथ साथ आए सभी जनों ने फूलों से श्रद्धांजली दी। तत्तपश्चात् परलोक के सम्बन्ध में एक गीत का गान किया गया। सभी के दिल भर भर आ रहे थे। इसके बाद सभापति जी ने फरमाया कि परमपूजनीय भगवान देवात्मा की शिक्षा के अनुसार परलोक सत्य है हमारा अस्तित्व दो वस्तुओं से बना है। एक शरीर है व दूसरा इसको चलाने वाली आत्मा है। शरीर मर जाता है और आत्मा कुछ नियम पूरे होने पर अपने लिए सूक्ष्म शरीर का निर्माण कर लेती है। श्रीमति जयदेवी जी की शारीरिक मृत्यु के बाद उनको वह सब हालात मिले जो सूक्ष्म शरीर बनाने के लिए जरूरी होते हैं। इसके बाद सभा पति जी ने श्रीमति जयदेवी जी के गुणों का ब्यान करते हुए बताया कि उनको भगवान देवात्मा के प्रति पूर्ण विश्वास था। उन्होंने अपने जीवन में गुरू की शिक्षा को अपनाया व सारी जिन्दगी गुरू की शिक्षा पर दृढ़ रहीं। श्रीमति जी सन् 1954 से भगवान देवात्मा की शिष्या थीं। वे अपने पति के साथ सेवक बनी थीं। अनपढ़ होते हुए भी इतने साल तक उनका गुरू के प्रति विश्वास बना रहा। उनकी बड़ी इच्छा थी कि उसका सारा परिवार इस सच्चे गुरू से जुड़ कर अपने जीवन का भला करे ।

अपनी अन्तिम इच्छा के मुताबिक उन्होंने अपने परिवार को खास तौर पर अपने बेटे जगदीश प्रशाद जी को, यह आदेश दिया था कि उनके मरने के बाद उनका अन्तिम संस्कार केवल देव धर्म की विधि से ही कराया जाए। उनकी अस्थियां हरिद्वार में

न डाली जायें बल्कि किसी बहते हुए गहरे पानी में प्रवाह की जाए। उनकी श्राद्ध की सभा उनके निवास स्थान पर की जाए। श्राद्ध में आए सभी जनों को अच्छा खाना खिलाया जाए। उस खाने में कोई मिठाई नहीं बनाई जाए। इसका सारा खर्च उनके पैसों से किया जाए। माता जी ने अपनी वसीयत में लिख दिया था कि मेरी उपकारी समाज को 35000 : i ; k nku eafn; k t k, ft l l sl ekt Hkou ea, d d ejk cuk, k t k, A ckd hi Sl ekd ksc Sa eaj [k d j m l d sC, kt l sfd l h xjhc gksgk, cPpsd hi <kbZ d k [kpZfn; k t k, A ejs sejusd sckn ejsh vkRekd ks nku eafn; k t k, t ksfd mud sejusd sckn fud ky yh xbZ vkS nks l Tt ukd ksyxk nh xbZ A vHkh mud ksfn[kkbZ Hkh nssyx x ; k gS Sa J heefr t ; nsoh t hcgq bZkunkj] l knxh eapiqpk jgusoky h FkA fd l h d h fuUnk] pqxyh l snjw jgr h FkA

J k¼ d h l Hkk eav usl 'kks l Uns k v k, v kS i <sx ; sft ue ai jyks l okl hekr k d s l EcU

में लिखे गए उनके गुणों का पाठ किया गया। किस प्रकार उन्होंने अपने पति श्रीमान मक्खन सिंह जी की मृत्यु के बाद 34 साल तक मां के साथ-साथ पिता बन कर अपने बच्चों को पाला! खास कर गंगा नगर के रोटरी क्लब ने माता जी की आंखे दान में देने पर उनका यह उपकार याद किया। उनकी आंखें दान देने पर दो व्यक्तियों को यह संसार दिखाई दिया।

तत्पश्चात् शुभ कामना विषयक गीत का गान किया गया। अभी उसके बाद सभा पति जी ने शुभ कामना की कि माता जी की आत्मा को परलोक में अच्छे हालात मिले। उनका शुभ हो, उनको शान्ति मिले। उनको उच्च लोक वासी आत्माओं का साथ मिले। परलोक में अच्छे सामान मिलें। उनका किसी प्रकार का मोह न रहे। किसी सन्तान से, सामान से, जायदाद से काई खिचाव न रहे। साधन के बाद आए हुए सभी जनों को अच्छा भोजन कराया गया।

* * * * *

पाठकों को यह जानकर बड़ी खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव 23 सितम्बर से 25 सितम्बर, 2005 तक धर्मशाला सैक्टर 18-डी चण्डीगढ़ में बड़े चाव-भाव से मनाया जा रहा है। इस मुबारिक उत्सव से पहले चन्द दिनों का विशेष सत्संग रखा जा रहा है। यह सत्संग 18 सितम्बर से 23 सितम्बर प्रात: तक जारी रहेगा। 23 सितम्बर सांय 5:30 बजे सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा होगी । आप न केवल खुद इस अति पावन उत्सव में शामिल होवें, बल्कि ज़्यादा से ज़्यादा अन्य अधिकारी जनों को भी साथ लेकर आवें।